International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 03, No. 02(I), April - June, 2021, pp.126-130

कोविड–19 महामारी पर साहित्यिक विमर्श

भानु प्रकाश शर्मा*

सार

अगर हम अतीत का विश्लेषण करें तो हर सदी में मनुष्य सभ्यता पर महामारी का हमला हुआ है। महामारी और मनुष्य का पुराना नाता है। लगभग प्रत्येक सदी में इन दोनों का आमना सामना होता रहा है। स्वभावतः महामारी के नकारात्मक प्रभाव तो सदैव रहते ही हैं, परंतु प्रत्येक कठिनाई अपने साथ कुछ सकारात्मक अनुभव भी छोड़कर जाती है। कोविड–19 महामारी ने भी अपने नकारात्मक प्रभावों के अलावा कुछ सकारात्मक दृश्य भी दिखाए हैं। और यह भी देखने योग्य है कि प्रत्येक झंझावात के साथ साहित्य को नए–नए विषय देखने को मिलते हैं। कोविड–19 ने हमें इतने सारे अनुभव दिए हैं कि साहित्य की कथावस्तु या विषय वस्तु के लिए विविध नवीन प्रसंग उपस्थित हो गए हैं। प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य मुख्य रूप से यही है कि कोविड–19 महामारी ने हमें जो नवीन और अनोखे अनुभव प्रदान किए हैं, वह साहित्य की विषय वस्तु में किस–किस रूप में सामने आ सकते हैं उन्हीं नूतन विषय वस्तुओं को देखने का प्रयास इस आलेख में हमने किया है। बीसवीं सदी में जब इसी प्रकार विश्व महामारी के प्रभाव से गुजर रहा था तो आचार्य ओशो ने कहा–"लेकिन में फिर कहता हूं हर समस्या मूर्ख के लिए डर होती है जबकि ज्ञानी के लिए विद्वानों के लिए अवसर।"आखिर महावीर स्वामी ने अपने अनेकांतवादी दर्शनमें यही तो स्पष्ट किया था कि सत्य को केवल एक आयाम से नहीं देखा जा सकता। कोविड–19 महामारी के प्रभाव भी उसी प्रकार विविध कोणों से देखे जाने चाहिए। लंबे समय तक व्यक्ति और समाज को कोविड–19 के कारण जिस नई जीवनशैली से दो–चार होना पड़ा, उससे लगातार निष्क्रिय बैठे रहने से मनुष्य को कर्म की महत्ता का पता चला, स्त्री के घरेलू काम की कठिनाइयों को जानने का जीवंत अनुभव व्यक्तियों को हुआ, बच्चों ने अपने स्कूल और कॉलेज को फिर से पुरजोर याद किया, भाषा को लॉकडाउन, पैंडेमिक, कंटेनमेंट जोन, सोशल डिस्टेंसिंग क्वारंटाइन कोरोना–बेबीजैसेविविध नए शब्द मिले, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति नवीन दृष्टिकोण सामने आए, सामाजिक संबंधों में भी नवीन बोध का अनुभव हुआ, कुछ दिनों के लिए ही सही पर्यावरण शुद्ध और साफ हो उठा। इन्हीं प्रभावों का वर्णन और इन प्रभावों से साहित्य की विषय वस्तु पर होने वाली संभावित प्रतिक्रिया का चित्रण इस आलेख में हमने किया है। निश्चित ही साहित्य की विषय वस्तु इन नवीन और मौलिक अनुभवों से समृद्ध होगी। और नए–नए तरीकों से यह प्रसंग साहित्य के कथानक में हमारे सामने आते रहेंगे।

कुंजी शब्दः *कोविड–19, लॉकडाउन, पैंडेमिक, कंटेनमेंट जोन, सोशल डिस्टेंसिंग.*

प्रस्तावना

महामारी और मनुष्य का पुराना नाता है। हर सदी में इन दोनों का आमना–सामना होता ही रहा है।निसंदेह कोविड–19 की घटनाइक्कीसवीं सदी में मनुष्य और महामारी का पहला आमना सामना है। साहित्य हमेशा बड़े मुद्दों की तलाश में रहता है। आखिर क्यों ना हो, साहित्य और समाज मैं दर्पण और दर्शक का संबंध है। कोविड–19 से बड़ा विषय साहित्य के लिए भला और क्या हो सकता है। कोविड–19 महामारी ने संसार को

* सहायक आचार्य हिंदी, राजकीय महाविद्यालय, उनियारा, राजस्थान।

अनगिनत संदेश दिए हैं। आगे वर्षों तक महामारी के प्रभाव दुनिया में विश्लेषित किए जाते रहेंगे। इस घटना ने साहित्य को बहुत सारे विषय प्रदान किए हैं। आने वाले समय में कोविड–19 के प्रभाव साहित्य की विषयवस्तु को प्रभावित करते रहेंगेउन कुछ प्रभावोंको हम इस प्रकार देख सकते हैं।

स्त्री के घरेलू कार्य की महत्ता

कोविड–19 ने पारिवारिक जीवन में एक विशिष्ट प्रभाव दर्शाया है। स्त्री के घर के कामकाज को कभी बहुत ज्यादा महत्व नहीं मिला। हम कहने भर को कहते रहे कि घरेलू स्त्री का काम बहुत महत्वपूर्ण है, पर यथार्थ में यह विचार बौद्धिक ही रहा। परंतु कोविड–19 के कारण भारतीय समाज में स्त्री के घर के कामकाज की महत्ता को समझा गया। जब पुरुष वर्ग लॉकडाउन के प्रभाव से लंबे समय तक घर पर परिवार के साथ रहा तो स्त्री की दैनिक बोरियत भरी और कठिन दिनचर्या को पुरुष ने भी अनुभव किया। सोशल मीडिया पर ऐसे संदेशों की बाढ़ देखी जा सकती है, जिनमें घरेलू कामकाजी महिला के समर्थन में भावुक और तार्किक दलीलें हैं।अभिनेता से राजनेता बनने चले कमल हासन ने तो आसन्न चुनाव में घरेलू कामकाजी महिलाओं को मासिक वेतन देने का प्रस्ताव भी सोच लिया।[1] कोविड–19 नेलंबे समय तक पुरुष को स्त्री के साथ रखकर उसके कामकाज के महत्व को समझा ही दिया।

कर्म की महत्ता प्रतिपादित

इस महामारी ने मनुष्य को एक बड़ा रोचक अनुभव दिया। घर में बैठकर व्यक्ति को यह पता चला कि बिना काम के रहना कितना मुश्किल है।पहले बड़ी संख्या में पुरुष या स्त्री अपनी नौकरी या व्यवसाय के दैनिक जीवन से बड़े परेशान से थे। हर व्यक्ति अपने काम के लिए भागा जा रहा था, और बहुत सारे व्यक्ति इस काम काज से बचकर लंबा आराम चाहते थे, और सभी को लगता था कि आराम मिलना भाग्य में नहीं है, और उनका वश चले तो वह यह काम कभी न करें। परंतु इस महामारी ने सभी कामकाजी मनुष्य को अपने काम के प्रति आकर्षण से भर दिया। जब घर में लंबे समय तक पुरुष बिना काम के पड़ा रहा, तो उसे पता चला कि काम करना जीवन में कितना महत्वपूर्ण है। विभिन्न सर्वे में एक बात निश्चित रूप से निकलकर आई कि प्रत्येक व्यक्ति अपने काम पर जाना चाहता है, और आराम को पचाना अब असंभव है। भगवानकृष्ण ने अर्जुन को गीता में यह स्पष्ट किया था कि कर्म के बिना रहना मनुष्य के लिए असंभव है।

"नहिकश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत।
कार्यतेहय्वशरू कर्म सर्वरूप्रकृतिजैर्गुणरू।।"[2]

अर्थातनिसंदेह कोई भी मनुष्य किसी भी काल में क्षण मात्र भी बिना कर्म किए नहीं रहता क्योंकि सारा मनुष्य समुदाय प्रकृति जनित गुणों द्वारा प्रवेश हुआ कर्म करने के लिए बाध्य किया जाता है' फिर भी कृष्ण का यह गूढ़ अर्थ समझ से दूर था परंतु कोविड–19 महामारी ने मनुष्य को निष्क्रिय बैठा कर उसके सामने कर्म की महत्ता स्थापित ही कर दी। हो सकता है कि साहित्य की नई विषय वस्तु यह घोषणा कर दें कि 'आराम हराम है'।

शिक्षा के नए आयाम

कोविड–19 ने हमें नए शैक्षिक परिदृश्य में पहुंचा दिया। टेक्नोलॉजी के नवीन संसाधनों से हमने ऑडियो और वीडियो के रूप में दूर से ही शिक्षा प्राप्त करना सीखा। साथ ही यह विषमता भी सामने आई कि गरीब वर्ग शिक्षा के इस आयाम से दूर ही रह गया। इन नवीन उपायों से स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव भी सामने आए। इधर स्त्री और पुरुष के अतिरिक्त बच्चों को भी एक नए अनुभव का पता चला। विद्यार्थी भी अपने स्कूल और कॉलेज जाने से परेशान ही थे। अधिकांश बच्चे स्कूल जाने को एक बोझ ही समझते थे परंतु कोविड–19 महामारी ने विद्यार्थियों को स्कूल प्रेम से भर ही दिया। अधिकांश बच्चों ने अपने स्कूल को बेतहाशा हृदय से याद किया, और उन्हें पता चला कि घर से निकलकर स्कूल जाना कितना महत्वपूर्ण है। भारत में सोशल मीडिया के संदेशों मेंअपने अध्ययन स्थल के प्रति विद्यार्थियों में जबरदस्त आकर्षण देखा जा सकता है। कि किस प्रकार बच्चों ने महामारी में छुट्टियों के समय अपने स्कूल कॉलेज को याद किया।सोशल मीडिया के एक संदेश में किसीने "स्कूल की याद" कविता में लिखा –

"जब से चला कोरोना,
शुरू हो गया रोना
अच्छे भले थे सारे
खुशियां मना रहे थे
ऑफिस भी सब खुले थे
स्कूल जा रहे थे।"[3]

घर से दूर जाकर बाह्य–शिक्षा पाने के महत्व को हमने जाना। निश्चित ही साहित्य की कथावस्तु में इस महत्व को स्थान मिलेगा।

शारीरिक स्वास्थ्य पर नवीन चिंतन

महामारी के समय अगस्त के महीने में अमर उजाला अखबार ने एक रिपोर्ट[4] प्रकाशित की, के किस प्रकार लॉकडाउन के कारण लगातार घर पर रहते हुए बहुत से लोगों ने मोटापे और घुटने की समस्या का सामना किया। वजन बढ़ने की समस्या बहुत ज्यादा देखी गई। प्रत्येक व्यक्ति ने स्पष्ट रूप से अनुभव किया कि शारीरिक गतिशीलता जीवन में अनिवार्य है। घूमने फिरने और खेलने का महत्व व्यक्ति और समाज ने गहराई से समझ लिया। इस अवधि में चिकित्सकों ने भी ज्यादातर यही संदेश प्रसारित किया कि व्यक्ति को शारीरिक चुस्ती फुर्ती हमेशा रखनी चाहिए। शारीरिक गतिशीलता का महत्व लोगों ने जीवंतता के साथ अनुभूत किया। इधर बीमारी कानया मनोविज्ञान भी सामने आया। जो मरीज प्रत्येक 10–15 दिन में डॉक्टर से मिलना जरूरी समझते थे, वह महामारी के कारण कई महीनों तक डॉक्टर से दूर रहे, फिर भी सुरक्षित रहे। इस अवधि में आश्चर्यजनक रूप से अस्पतालों में बच्चों के जन्म में सिजेरियन डिलीवरी की तुलना में नॉर्मल डिलीवरी के परिणाम ज्यादा रहे। स्वास्थ्य के ये अनोखे प्रभाव साहित्य की विषय वस्तु को नई दृष्टि जरूर देंगे।

सामाजिक संबंधों में नया बोध

महामारी की वजह से अचानक बदली हुई जीवनशैली ने सामाजिक संबंधों में नए नए अनुभवों को दर्शाया। परिवार और पड़ोस के प्रति व्यक्तियों ने नूतन दृष्टि अनुभव की। कोविड–19 ने समाज को आस–पड़ोस का महत्व भी भली प्रकार से समझा दिया इस अवधि में वही दुकानदार सबके काम आया जो घर के सबसे नजदीक था। लॉकडाउन में घर से बहुत दूर जाना तो संभव नहीं था, इसीलिए घर के आस–पास लोग भली प्रकार से एक दूसरे के साथ नजदीक रहकर परिचित हुए।पहले दैनिक कामकाज की भागमभाग के बीच अपने घर पर भी समय देना मुश्किल था, परंतु कोरोना ने व्यक्ति को घर के साथ–साथ आस–पड़ोस के साथ रहना भी सिखा दिया। हो सकता है कि पाठक आने वाले कहानी और उपन्यासों में पड़ोसी के प्रति स्नेह और प्रेम के विषय को पढ़ता हुआ नजर आए।

पर्यावरण के प्रति मनुष्य की जवाबदेही

21वीं सदी की इस पहली महामारी ने मनुष्य को यह समझा दिया कि प्रदूषण के लिए केवल और केवल मनुष्य ही जिम्मेदार है। जब नदियां मनुष्यों की भीड़ से दूर हुई, तो कल कल और साफ बहता हुआ पानी उन्हीं प्रदूषित कही जाने वाली नदियों में नजर आया हरिद्वार जैसी नगरी में मनुष्य के चढ़ाए हुए फल और फूल के साथ–साथ फैलाए हुए कचरे के कारण जो गंगा मेली नजर आती थी, उसका कल–कल बहता हुआ बिल्कुल साफ पानी कंई न्यूज़ चौनलों के समाचार में देखा गया। सोशल मीडिया पर कई लोगों ने विभिन्न नदियों के साफ बहते हुए पानी के वीडियो प्रसारित करके यह साबित कर दिया कि पर्यावरण को प्रदूषित करने में पूरी मनुष्यता ही जिम्मेदार है। लॉकडाउन में मनुष्य से दूर रहकर वही नदियां पूर्णतः साफ और शुद्ध नजर आई। पर्यावरण के लिए काम करने वाली एक संस्थाडाउन टू अर्थ ने अपनी एक रिपोर्ट में लिखा–"अगर नाइट्रोजन ऑक्साइड के स्तर को देखें तो यह दिल्ली में 42ः मुंबई में 68ः कोलकाता में 49ः और बेंगलुरु में से 30ः तक कम रहा यह बदलाव गाड़ियों के सड़क पर ना रहने फैक्ट्रियों के बंदी रहने और निर्माण कार्यों के रुकने की वजह से हुआ है।[5]

यहां तक कहा जा सकता है कि भविष्य में कुछ दिनों के लिए लॉकडाउन इसलिए लगाया जाए कि जिससे थोड़े समय के लिए ही सही मगर पर्यावरण शुद्ध हो उठे। प्रदूषण के प्रति मनुष्य की जवाबदेही को साबित करना साहित्य और उसकी विषय वस्तु की नैतिक जिम्मेदारी भी है।और साहित्य इस जिम्मेदारी को निभाता हुआ जरूर नजर आएगा।

प्रशासन के प्रति पारंपरिक धारणा में बदलाव

बॉलीवुड फिल्मों के कथानक में पुलिस की छवि प्राय खलनायक की ही रही है। कुछ अवसरों को छोड़ दिया जाए जब पुलिस को नायक के रूप में दिखाया गया,परंतु समग्र रूप से देखें तो भारतीय फिल्मों का कथानक पुलिस और प्रशासन की छवि को खलनायक के रूप में ही चित्रित करता रहा है। इसी प्रकार स्वास्थ्य कर्मियों, डॉक्टरों के प्रति भी भारतीय जनता का नजरिया कुछ खास ठीक नहीं रहा। इसी प्रकार सफाई करने वाले सफाई कर्मियों को भी कार्य के प्रति लापरवाही माना जाता रहा। परंतु कोविड–19 महामारी ने निश्चित रूप से डॉक्टर पुलिस और सफाई कर्मियों की छवि को बदलने में सहायता की हैंऔर कोविड–19 के समय जब सारे लोग अपने अपने घरों में सुरक्षित होकर बैठे हुए थे, उस समय यह तीनों वर्ग ही आगे आकर कोरोना की विभीषिका के बीच अपने कर्तव्य को निभा रहे थे स्वास्थ्य कर्मियों को कोरोना के खिलाफ समग्रता से लड़ते हुए देखा गया। इसी प्रकार सफाई कर्मी भी सतत गली और मोहल्लों को साफ करने में जुटे रहे। इन सब कारणों ने निश्चित रूप से इन वर्गों की छवि को बदलने में सहायता की समाज के लोगों ने इन तीनों वर्गों को खूब सराहा और विभिन्न स्थलों पर इनका सम्मान भी किया। महामारी में प्रशासन को विराट नियंत्रण करना पड़ा, परंतु पूरे देश में शासन के साथ सहयोग की भावना ही ज्यादा देखी गई। मजे की बात यह भी है की पुलिस का डंडा भी, जो कठोरता का प्रतीक था इस कोविड–19 प्रभाव के समय हास्य के प्रसंग में सहायक बना। लघु वीडियो बनाने वाले टिकटोक और कई अन्य ऐप की विषय वस्तु में पुलिस का डंडा हास्य रस के प्रसंग में काम आया।जैसे एक लघु वीडियो मेंलॉकडाउन में एक व्यक्ति अच्छा भला घर से निकलता है और थोड़ी देर बाद पुलिस के डंडे सेपिटकर फटे हाल ढंग से वापस घर लौट आता है। वस्तुतः पुलिस की कठोरता की विवशता को आम जनता ने समझा और पुलिस का डंडा हास्य रस का प्रतीक बन गया। यानी कोविड–19 ने पुलिस की परंपरागत छवि को बदलने में सहायता ही की और साहित्य को बदली हुई नयी विषय वस्तु प्राप्त हुई।

मनुष्य की तुच्छता, नश्वरता की स्वीकार्यता

कॉविड महामारी ने प्रकृति के समक्ष मनुष्य की असहायता को पूरी तरह प्रकट कर दिया। जो मनुष्य विज्ञान के विकास को लेकर बड़ी–बड़ी डींगे हांक रहा था, वह एक छोटे से वायरस के सामने बोना साबित हो गया। अमेरिका जैसे बड़े–बड़े विकसित देशों की ताकत यथार्थ के धरातल पर निरीह साबित हुई। भले ही विश्लेषकों ने विकसित, विकासशील और गरीब देश के रूप में विभिन्न वर्ग निर्धारित कर दिए हो, परंतु कोरोना महामारी ने दुनिया के सभी देशों को एक बराबर ला खड़ा किया। चाहे अमेरिका जैसा सबसे शक्तिशाली देश हो, अथवा कोई कमजोर देश हो, इस महामारी में सब एक वर्ग में खड़े नजर आए। डब्ल्यूएचओ ने जो आंकड़े बताएं उनमें अमेरिका जैसे चार बड़े देशों में सर्वाधिक मौतें हुई।[6] वैसे तो मनुष्य की नश्वरता को साहित्य वर्णित करता ही रहा है, परंतु कोविड–19 महामारी के प्रभाव सेमनुष्य की तुच्छता को लेकर साहित्य में बहुत सारी विषय वस्तु सामने आ सकती है।

भाषा में नए शब्दों की स्वीकार्यता

निश्चित रूप से अंग्रेजी भाषा नए विदेशी शब्दों को ज्यों का त्यों स्वीकार करने में सबसे उदार है। इस मामले में हमारी हिंदी भाषा बहुत संकुचित कही जा सकती है। हमारे हिंदी के महारथी कंप्यूटर को संगणक, बायसाइकिल को द्वी चक्रगामिनी, ट्रेन को लोहपथ गामिनी जैसे नाम गढकर भाषा को मुश्किल बनाते रहे हैं, परंतु कोरोना महामारी के पश्चात हिंदी भाषा में जिस प्रकार से नए शब्दों को स्वीकार किया गया है, यह नई सुखद दृष्टि है। विदेशी शब्दों के हिंदी शब्द बनाकर हम भाषा की सहजता को मुश्किल करते रहे हैं। परंतु इस बार हिंदी ने विभिन्न विदेशी शब्दों को स्वीकार करके अपने आप को समृद्ध बनाने का प्रयास किया है।

लॉकडाउन, सोशल डिस्टेंसिंग, क्वारंटाइन, पैंडेमिक, आइसोलेशन, कंटेनमेंट जोन, इम्यूनिटी, अनलॉक, कोरोना–बेबी स्टेएट होम जैसे अनगिनत शब्दों को सहज रूप में स्वीकार करके अबकी बार हमने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। और केवल हिंदी ही नहीं दुनिया की प्रत्येक भाषा में कोरोना महामारी के प्रभाव के कारण इन नए शब्दों का आगमन हुआ है। कोरोना ने भाषाओं को समृद्ध करने में योगदान दिया है।बर्किंघम सिटी यूनिवर्सिटी के समाज–भाषाशास्त्री रॉबर्ट लॉसन का कहना है कि "ब्रेग्ज़िट भले ही सबसे हाल का उदाहरण हो, लेकिन कोविड–19 के कारण भाषायी परिवर्तन की गति अभूतपूर्व है"[7]

हिंदी फिल्में हो या टीवी सीरियल, कहानी हो या उपन्याससब की कथावस्तु या विषय वस्तु मेंसाहित्य की भाषा अब नए शब्दों के साथ आगे आ रही है।

निष्कर्ष

महावीर स्वामी ने अपने स्यादवादी दर्शन में तर्कपूर्ण ढंग से यह तथ्य स्थापित किया कि सत्य के अनेक आयाम होते हैं। किसी भी घटना को सिर्फ एक नजरिए से नहीं मापा जा सकता।यही बात कोविड–19 पर पूर्णता लागू होती है। भले ही महामारी के बहुत सारे नकारात्मक प्रभाव है। दुनिया की अर्थव्यवस्थायेंध्वस्त हो गई, गरीबी और भुखमरी का प्रकोप बढ़ा,अपने निश्चित ठिकाने को छोड़कर लोग पलायन को मजबूर हुए। परंतु कुछ अच्छे अनुभव भी मनुष्य सभ्यता को हुए, और उक्त विवेचन में हमने इसके सकारात्मक प्रभाव को विवेचित करने का प्रयास किया है। इस महामारी में लोगों के बदले हुए जीवन से बहुत सारे प्रसंग हमारे सामने आए हैं।साहित्य अपनी कथावस्तु में इन विविध प्रसंगों को जरूर स्थान देगा। अनजाने में ही साहित्य को अनंत विषय मिल गए हैं, और कहानी,उपन्यास, कविता, फ़िल्में और टीवी सीरियलों में यह सारे प्रसंग साहित्य के विषय को निश्चित ही समृद्ध करते रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://hindi.news18.com/amp/blogs/anant-mittal/wages-for-housewives-is-a-revolutionary-idea-may-change-politics-forever-tamilnadu-kamal-hasan-shashi-3421852.html
2. iqLrd Jhen~Hkkxor xhrk] v/;k; rhu] lw= ikap] i`"B 52] izdk'kd xhrk izsl xksj[kiqj 273005 ISBN 81-293-0105-9
3. https://www.amarujala.com/kavya/mere-alfaz/siraj-ansari-school-ki-yaad
4. https://www.amarujala.com/delhi-ncr/people-struggling-with-weight-gain-and-joint-pain-problems-in-corona-period
5. https://www.downtoearth.org.in/hindistory/pollution/air-pollution/amp/covid-19-cleaning-up-polluted-air-from-lockdown-will-we-be-able-to-learn-anything-from-it-70004
6. https://m.jagran.com/blogs/news/most-powerful-country-usa-facing-most-death-toll-rate-due-to-covid-19-know-india-coronavirus-update/amp/
7. https://www.bbc.com/hindi/vert-cap-52965049

❖◆❖